पाठ 11
आदर्श और वरदान

● **संकलित**

आइए, सीखें : पारस्परिक प्रेम, सहयोग व सहानुभूति के भावों को समझना। प्रतिभा को विकसित होने के अवसर प्रदान करना ।

संध्या का समय था। दिनभर के थके हारे दीनानाथ शर्मा अपनी फैक्ट्री से घर लौटे। कमरे में प्रवेश किया ही था कि मेज पर पड़े निमंत्रण-पत्र पर निगाह पड़ी। बरबस वे उस तरफ खिंचे चले गए। लिफाफा खोलकर देखा तो आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता उनके चेहरे पर छा गई। छगन का निमंत्रण-पत्र है। उसने नर्सिंग होम खोला है। उसने उद्घाटन पर बुलाया है। लिफाफे पर प्रेषक के स्थान पर लिखा था, डॉ. छगन चौधरी। छगन, वही छगन। उन्हें तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि छगन डॉक्टर बन गया है और अपना नर्सिंग होम खोल रहा है। वे बार-बार निमंत्रण-पत्र पढ़ने लगे। विचारों में खोए दीनानाथ कुर्सी पर बैठ गए। मन में अतीत के बंद दरवाजों को खोलने लगे। कैसे भूल सकते थे उस लड़के को जिसने अपनी जान की बाजी लगाकर उनके प्राण बचाए थे।

उन्हें याद आया कि वर्षा की पहली फुहारें धरती पर पड़ते ही वातावरण मिट्टी की सौंधी-सौंधी महक से भर गया था। बादल छाए हुए थे; वर्षा रूक गई थी, किन्तु मटमैला पानी अभी भी गलियों में बह रहा था। बच्चे पानी से खेल रहे थे, गीली मिट्टी से घरौंदे थाप रहे थे। दीनू और रानी ने पिताजी से घूमने जाने की जिद की। मना करने पर भी जब बच्चे नहीं माने तो शर्मा जी अनमने से बच्चों को साथ ले तालाब की तरफ निकल गए। गाँव में घूमने की तो कोई खास जगह थी नहीं। बस, मात्र एक तालाब था। तालाब की पाल पर बड़े-बड़े वट-वृक्ष इसकी पुरातनता की गवाही देते थे। एक मंदिर था। उसके पास ही बड़ा सा चबूतरा बना था। वे वहीं पर बैठ गए। दीनू और रानी बहते पानी में खेलने लगे। अचानक दीनू का पाँव फिसल गया, और वह तालाब में गिर गया।

शर्मा जी ने जब यह देखा तो वे जोर-जोर से चिल्लाने लगे। उनकी आवाज सुनकर पास ही बकरियाँ चराने वाला छगन दौड़ा आया। उसने दीनू को डूबते देखा तो तुरंत तालाब में छलांग लगा दी। पहले तो वह भी पानी में डूबता-सा लगा, परन्तु दूसरे ही पल पानी पर तैरता दीनू को खींचता नजर आया। हाँफता हुआ छगन दीनू को किनारे खींच लाया। शर्माजी का तो कलेजा मुँह को आ गया था। उन्होंने सहारा देकर दोनों को संभाला। दीनू घबराया हुआ खड़ा था। छगन हाँफ रहा था। शर्माजी ने छगन को सीने से लगा लिया। आँखों में आँसू भर आए। वे बोले, ''आज तुमने ही दीनू के प्राण बचाए हैं, नहीं तो अनर्थ हो जाता''। छगन ने शिष्टता से कहा, ''मुझे तैरना आता था, जब भी बकरियाँ चराने आता हूँ, मैं इस तालाब में खूब तैरता हूँ। जैसे ही आपकी

शिक्षण संकेत -

♦ परोपकार अथवा सहानुभुति का महत्व बताने वाले किसी प्रसंग से कहानी का प्रारंभ कीजिए। ♦ हाव-भाव के साथ कहानी बच्चों को सुनाएँ तथा उनसे सुने। ♦ पर्यायवाची तथा विलोम शब्दों का ज्ञान उदाहरण के माध्यम से दें। ♦ कहानी पढ़ाकर उनसे मिलने वाली 'शिक्षा' बताइए तथा बच्चों से पूछिए।

चीख सुनी तो मैं अपने आप को रोक नहीं पाया। ''

उसके सभ्य आचरण से शर्मा जी बहुत प्रभावित हुए। प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने पूछा ''तुम पढ़ने भी जाते हो बेटा? '' वह बोला, ''जी, मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था। फीस नहीं होने से पढ़ाई छोड़ दी। अब बकरियाँ चराता हूँ।'' ''तुम्हारा नाम क्या है? और कहाँ रहते हो? '' शर्मा जी ने पूछा।''मेरा नाम छगन है और गाँव के बाहर मेरा घर है'' संकोच के साथ उसने कहा।'' अच्छा बेटा! तुम्हारा एहसान मैं कभी नहीं भूलूँगा, 'भगवान तुम्हारी मदद करे,' कहते हुए शर्मा जी ने दीनू को संभाला। दीनू अनहोनी से अब तक भयभीत था।

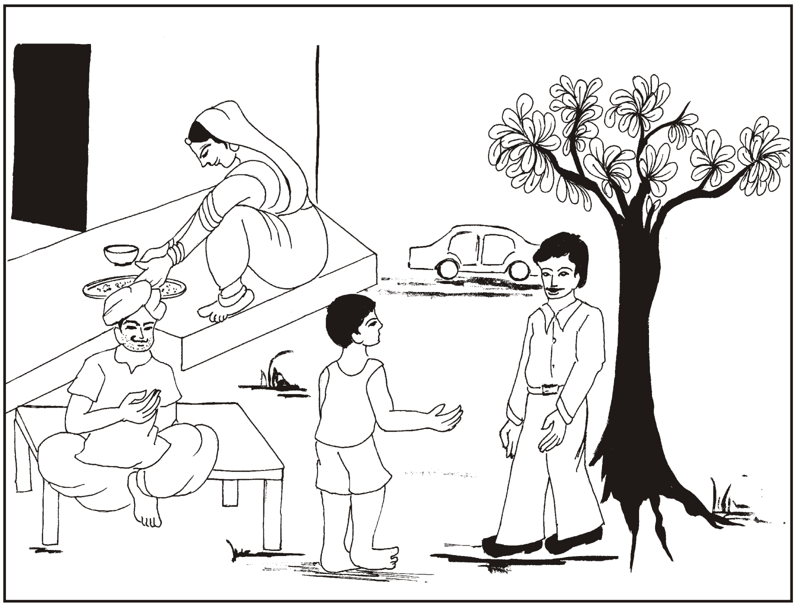

घर पहुँचकर भी शर्मा जी उस घटना को भूल नहीं पा रहे थे। बार-बार उस सहज, सुन्दर, शिष्ट, बालक का चेहरा उनकी आँखों के सामने आ जाता । उन्होंने छगन की मदद करने का निर्णय किया। प्रात:काल का समय था। छगन बाजार जाने को तैयार हो रहा था। बाबा आँगन में खटिया पर बैठे थे। माँ घर के काम में व्यस्त थी। अचानक शर्माजी की कार उसके घर के सामने रूकी। छगन को पहचानने में देर नहीं लगी। उसने आगे बढ़कर शर्माजी के चरण छुए, ''आप कैसे पधारे?''सकुचाते हुए छगन बोला ।

शर्माजी ने चारों तरफ नजर डाली। घर के हालात समझते देर नहीं लगी। वे बोले, ''चलो आज से तुम भी दीनू के साथ स्कूल में अपनी पढ़ाई करो। तुम्हारी पढ़ाई का सारा खर्च मैं वहन करूँगा।'' छगन की प्रसन्नता का कोई पारावार न था। अब तो छगन और दीनू पक्के मित्र बन गए।

शर्माजी सरकारी दफ्तर में अफसर थे। घर में सभी सुविधाएँ थीं। दीनू की सेवा में नौकर-चाकर लगे ही रहते थे। कहाँ दीनू, और कहाँ गरीब किसान का बेटा छगन! पर मित्रता ऊँच-नीच नहीं देखती है। हृदय की गहराई से एवं सच्चे मन से की गई मित्रता भी निस्वार्थ एवं निर्मल होती है। एक-दूसरे के सुख-दु:ख के सहभागी बनकर ही मित्रता के आदर्श की स्थापना की जा सकती है। छगन और दीनू की मित्रता भी कृष्ण-सुदामा की सी मित्रता थी।

सुख-का समय शीघ्र व्यतीत हो जाता है। तीन वर्ष न जाने कैसे बीत गए। दोनों मित्र साथ-साथ पढ़ते, खेलते और खाते। दीनू के लिए छगन एक आदर्श बन गया; और छगन के लिए दीनू एक वरदान।

अचानक एक दिन यह समाचार सुनकर छगन उदास हो गया कि शर्माजी का स्थानांतरण अन्य शहर

में हो गया है। दीनू भी उदास था। आखिर मित्रों के बिछुड़ने की घड़ी आ ही गई, कितना रोए थे दोनों...।

अतीत के बारे में सोचते-सोचते दीनानाथ की आँखों के कोर कब गीले हुए, उन्हें पता ही नहीं चला। जब लुढ़ककर आँसू गालों पर आए तो दीनानाथ चौंक गए। जेब से रूमाल निकाला, चश्मा उतारकर पोंछा। रामू चाय ले आया। दीनानाथ अपने चेहरे पर उभरते अतीत के चित्र को रोकने का प्रयास करने लगे।

चाय का प्याला उठाकर चुस्कियाँ लेने लगे, लेकिन मस्तिष्क में फिर मधुर स्मृतियाँ कौंध गईं। कितने खुश थे पिताजी जब अखबार में छगन का परीक्षा परिणाम देखा। वह बोर्ड परीक्षा की योग्यता सूची में शीर्ष स्थान पर था। उनके मुँह से यही वाक्य निकला था, ''अब छगन के सपने अवश्य पूरे होंगे, उसे छात्रवृत्ति मिलेगी। वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सकेगा।''

शायद पिताजी का आशीर्वाद ही है कि छगन डॉक्टर बन गया है। आज छगन इतना समर्थ बन गया है कि उसने रतनगढ़ में नर्सिंग होम खोल लिया है। कितना लम्बा समय गुजर गया है छगन से बिछुड़े। आज अचानक उभरी तस्वीर बार-बार मन को उद्वेलित कर रही थी।

दीनानाथ को विचारों में खोया देख उनकी पत्नी मधुमती बोली, '' क्या बात है? आज आप किस सोच में पड़े हैं? '' ''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। कल हमें रतनगढ़ जाना है, मेरे मित्र डाक्टर छगन के क्लीनिक का उद्घाटन है।'' मुस्कुराकर दीनानाथ बोले, ''देखो यह निमंत्रण-पत्र''।

मधुमती ने लिफाफे से निमंत्रण-पत्र निकाला। साथ में कागज की चिट लगी थी। ''उस पर लिखा था बाबूजी को जरूर लाना। उद्घाटन उनके हाथों से होगा।'' मधुमती ने पढ़कर चिट दीनानाथ को दी। उसे पढ़ते ही दीनानाथ सुबक पड़े- 'काश ! आज पिताजी जिन्दा होते'!

दीनानाथ की कार सरपट दौड़े जा रही थी। मन भी तीव्र गति से मिलने की आतुरता में उड़ा जा रहा था। नियत समय पर वे रतनगढ़ पहुँचे। नर्सिंग होम के पास पंडाल लगा था। अतिथियों का आगमन प्रारंभ हो चुका था। चारों तरफ हँसी-खुशी का वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। दीनानाथ की निगाहें छगन को ढूँढने लगीं। छगन तो कब से प्रतीक्षा कर रहा था। कार से उतरते दीनानाथ को देखकर वह स्वागत के लिए आगे बढ़ा।

दीनानाथ एक क्षण तो ठिठके, लेकिन उन्हें छगन को पहचानते देर नहीं लगी। छगन बीस साल में इतना बदला हुआ दिखाई देगा, उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट, शरीर, सूट पहने, चमकीली फ्रेम का चश्मा लगाए छगन उनके सामने था। छगन कुछ बोले, उससे पहले दीनानाथ ने उसे गले लगा लिया। दोनों मित्र इस भांति मिले जैसे राम और भरत का मिलन हो।

क्षण भर तो ऐसा लगा जैसे समय ठहर गया हो। मधुमती स्तब्ध-सी खड़ी रही। गद्-गद् स्वर में छगन ने पूछा, ''बाबूजी नहीं आए''?

दीनानाथ के होंठ फड़ककर रह गए। आँखों में आँसू भर आए। भर्राए गले से बोले, ''बाबूजी हमें छोड़कर चले गए हैं छगन। '' छगन अपनी रूलाई नहीं रोक सका। इतने में ही छगन की पत्नी नीला ने आकर आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा ''भाईसाहब ! अब चलो भी सब आपका इन्तजार कर रहे हैं।''

छगन के अनुरोध पर दीनानाथ ने उद्घाटन किया। हँसी-खुशी से समारोह सम्पन्न हुआ। मेहमानों के

जाने के बाद दीनानाथ ने भी विदा लेनी चाही, पर छगन कब मानने वाला था। आज वर्षों बाद वे क्षण लौटे थे; जिनका स्मरण कर दोनों मित्र एक-दूसरे को ऋणी मान रहे थे।

दोनों ने जी भरकर बातें की। अपने सुख-दु:ख सुने, सुनाए। बीस वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद मिलन की सुखद घड़ी लौटी थी। दीनानाथ को लौटना था। छगन ने भारी मन से बिदा किया।

कोलतार की चिकनी सड़क पर कार जिस द्रुत गति से आगे बढ़ रही थी, उससे भी दुगनी गति से मन बीते समय की ऊबड़-खाबड़ पगडण्डी पर पीछे की और चला जा रहा था। गुजरे काफिले के गुबार की धुंध में खोए से छगन की आँखे सजल हो गईं। स्मृति में उभरा अक्स मानों कह रहा था, ''मेरे चिराग को तुमने बुझने से बचाया है, तुम्हारा घर सदैव रोशन रहेगा।''

नए शब्द

महक = खुशबू । **मटमैला** = मिट्टी के रंग वाला, । **पुरातनता** = पुरानापन, प्राचीनता, । **कलेजा मुँह को आना** = बेचैन हो जाना, घबरा जाना । **शिष्टता** = सभ्य व्यवहार, । **शिष्ट** = सभ्य। **पारावार**-समुद्र, असीम। **नि:स्वार्थ** = बिना स्वार्थ के। **स्मृतियाँ** = यादें, । **उद्वेलित** = विकल, बेचैन, **आतुरता** = अधीरता, जल्दबाजी, **स्तब्ध** = निश्चेष्ट, शांत। **गुबार** = धूल। **धुंध** = धुआँ, कोहरा। **अक्स** = परछाईं, चित्र।

अनुभव विस्तार

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -**

(क) सही जोड़ी बनाइए -

(अ)	(ब)
प्रात:काल	असुविधा
मिलना	नूतन
पुरातन	शत्रु
सुविधा	बिछुड़ना
मित्र	संध्या

(ख) सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) सुख का समय....................व्यतीत हो जाता है। (शीघ्रता से, देर से)

(ब) छगन और दीनू की मित्रता भी................. की सी मित्रता थी। (राम-कृष्ण, कृष्ण-सुदामा)

(स) लिफाफे पर प्रेषक के स्थान पर लिखा था......................।

(डॉ. छगन चौधरी, दीनानाथ शर्मा)

(द) मेरे चिराग को तुमने...................से बचाया है।

(जलने, बुझने)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) दीनू को डूबने से किसने बचाया ?

(ब) नर्सिंग होम किसने खोला था?

(स) योग्यता सूची में शीर्ष स्थान पर किसका नाम था?

(द) छगन की पढ़ाई पूरी करवाने की जिम्मेदारी किसने ली?

(ई) नर्सिंग होम किस स्थान पर खोला गया था?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न –

(अ) सच्चे मन से की गई मित्रता की क्या विशेषता होती है?

(ब) छगन के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ बताइए।

(स) दीनू और छगन एक दूसरे को ऋणी क्यों मान रहे थे?

(द) छगन की आर्थिक स्थिति कैसी थी?

(ई) दीनू और छगन की मित्रता की तुलना कृष्ण और सुदामा से क्यों की गई है?

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए –

छात्रवृत्ति, नि:स्वार्थ, स्तब्ध, आचरण, डॉक्टर

2. निम्नलिखित शब्दों में 'स' 'श' 'ष' वर्णों को उचित स्थान पर रखकर अशुद्ध शब्दों को शुद्ध कीजिए –

बरबश	–	बरबस
शिश्टता	–	....
सीर्ष	–	....
पुश्टि	–	....
साशन	–	....
रासन	–	....

3. निम्नलिखित शब्दों को वर्णक्रमानुसार लिखिए–

अचानक, आँखें, उन्हें, ईश्वर, आराम, आचरण, अच्छा, ऊपर, इधर, औकात, एक, उद्वेलित, ऐतिहासिक, अंगूर, अंबर

■ **ध्यान दीजिए**

वर्षा की फुहारें धरा पर पड़ते ही वातावरण मिट्टी की सौंधी-सौंधी महक से भर गया। मिट्टी की खुशबू सर्वत्र फैली थी। बच्चे गीली माटी से घरौंदे थाप रहे थे।

उपर्युक्त गद्यांश में रेखांकित शब्दों में चार प्रकार के शब्द सम्मिलित हैं।

(अ) वर्षा, धरा, वातावरण, सर्वत्र-ये शब्द जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हिन्दी भाषा में सम्मिलित हैं। ये तत्सम शब्द हैं।

(ब) मिट्टी, बच्चे आदि शब्द संस्कृत से परिवर्तित होते हुए हिन्दी भाषा में आए हैं। ये तद्भव हैं।

(स) सौंधी, माटी, घरौंदे , थाप शब्द आंचलिक बोलियों से आए हैं, ये देशज शब्द कहलाते हैं।

(द) महक और खुशबू ये शब्द विदेशी भाषाओं से आए हैं। ये विदशी (आगत) शब्द हैं।

4. **निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द अलग-अलग कीजिए-**
निमंत्रण, दरवाजा, मात्र, वृक्ष, नर्सिंग-होम, स्कूल, छात्रवृत्ति, सुबक, छांह, सरपट, स्थानांतरण, तीव्र, पगडण्डी

5. **'आ' उपसर्ग में 'चरण' शब्द जोड़कर बनता है 'आचरण'। इसी प्रकार 'आ' उपसर्ग लगाकर पाँच शब्द बनाइए ।**

6. **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-**

(क) मेहनती व्यक्ति किसी भी काम मे जान की ....लगाने में पीछे नहीं हटते।

(बाजी, होड़)

(ख) अपने पुत्र को सही सलामत देखकर माँ की आँखें............... आईं।

(भर, तर)

(ग) कृष्ण-सुदामा के मिलन की बड़ी सुखद......................... थी।

(घड़ी, जोड़ी)

(घ) शेर को सामने देख राहुल का कलेजा.................. को आ गया ।

(मुँह, सिर)

(ङ) अतीत के पलों को याद कर आशीष के होंठ .... लगे ।

(फड़कने, कटने)

अब करने की बारी

- ऐसी कोई घटना आपने जरूर देखी होगी, जिसमें किसी ने किसी की जान बचाई हो, कहानी के रूप में वह घटना लिखिए।
- असमर्थों को ऊपर उठाने वाले, किसी की सहायता करने वाले व्यक्ति को जानिए और संस्मरण लिखिए।